प्रभातखबर

गोवा फिल्म फेस्टिवल की शुरुआत माजिद मजीदी की फिल्म 'पीहू' से हुई। दूसरे दिन ईरानी फिल्मकार माजिद मजीदी ने कहा कि भारत में बहुत ही प्रतिभाशाली लोग हैं, लेकिन फिल्म इंडस्ट्री की छाया उन पर है, जिस वजह से वो खुद को दिखाने का मौका नहीं पा सके हैं। आज के समय में यह बात शिद्दत से महसूस हो रही है। माजिद मजीदी ने कहा कि ऐसा नहीं है कि केवल फिल्म इंडस्ट्री की वजह से ही होनहार लोगों के रास्ते में अड़ंगे हैं। और भी परेशानियां हैं, जो लोगों को समझ आ रही हैं। उन्होंने कहा कि इसी हफ्ते हमने 'एस दुर्गा' और 'पद्मावती' जैसे मामले देखे हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मैं सही हूं। कुछ फिल्मों पर मेरी राय जल्दबाजी भी हो सकती है। भारत में ऐसी संस्थाएं हैं, जो इन मुश्किलों का हल कर सकती हैं। 'एस दुर्गा' को न्यायपालिका ने मंजूरी दे दी है, जो अब इस फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जाएगी।

ईरानी फिल्मकार को भारत में 'घर' मिला...!

फिल्मकार सनल शशिधरन को अपना काम दिखाने का मौका मिल गया है। बहुत कुछ है, जो मेरी समझ के बाहर है, लेकिन कुछ असाधारण प्रतिभा के धनी लोग अधिनायकवाद से स्तब्ध हैं।

कुछ मजीदी ऐसे भी हैं, जिनकी फिल्म **'बियोंड द क्लाउड'** मुंबई और उसके आसपास के कलाकारों पर बनी है, जो यहां आई है, जिसे देख कर लगता है कि इन लोगों को भारत में ही घर मिल गया है। बाहर से आकर यहां काम करने और तारीफ पाने से ऐसा लगता है कि अब यही घर है। फिल्म **'चिल्ड्रन ऑफ हेवन'**, **'द कलर ऑफ पैराडाइज'**, **'द सांग ऑफ स्पैरो'** और **'बरान'** जैसी फिल्में बनाने वाले मजीदी की भारत में कई फिल्में बनाने की योजना है।

गोवा से गौतमन भास्करन

आपको याद होगा... ईरान की अभिनेत्री गोलशिफ्तेह फरहानी, जिसने दूसरे देश में जाकर अपनी पहचान बनाई है, जो अपनी शुरुआती फिल्म **'द पेटिएंस स्टोन'** में अच्छा काम दिखा चुकी है, जिसमें वह युद्ध से परेशान अफगानिस्तान में अपने जाहिल पति से बात करती है और इस सिलसिले में बदलाव का सफर शुरू होता है। बाद में उसके पति को अहसास होता है कि पत्नी का शोषण कर रहा है, तब वह अचानक जाग जाता है। शोषण की बात पर उसे अफसोस होता है। फरहानी के इसी काम को सराहा जा रहा है। अगली फिल्म **'सांग ऑफ स्कॉर्पियंस'** में भी उनकी तारीफ हो रही है, जिसमें वो भारतीय अभिनेता इरफान खान के साथ काम कर रही हैं। यह फिल्म दिसंबर में दुबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जाएगी। राजस्थान की महिला के किरदार में फरहानी ने कहानी को जिंदा कर दिया है। फरहानी के काम को उसके ही देश में मंजूर नहीं किया गया है। उसे पलायन करना पड़ा है। तेहरान की कई गरमियों में उसे देश छोड़ना पड़ा, जब सरकार ने उसके काम के तरीके को पसंद नहीं किया, जो उनके मुताबिक किसी विद्रोही से कम नहीं थे। वो अपनी जिंदगी अपने हिसाब से जीना चाहती थी। वह अपना चेहरा नहीं ढंकना चाहती थी। तेहरान की सड़कों पर घूमना पसंद था, साइकल चलाती थी और दो प्रेमियों के बीच चिट्ठियां लाती-ले जाती थी। खुद भी बिंदास और विद्रोही स्वभाव की थी, जिस पर बवाल मचा, तो उसे यह रास नहीं आया। स्कूल में भी उसने इस रोक-टोक पर विरोध किया था।

इन सब बातों की वजह से वह अपने ही देश से अलग-थलग है। बीस की उम्र में शादी के बाद एक अमेरिकी फिल्म में वह टॉम क्रूज के साथ काम कर रही है, जिससे ईरान के पादरी नाराज हैं। ऐसे में वह घर छोड़ पेरिस भाग आई है, जहां उसने कई पत्रिकाओं के लिए न्यूड पोज दिए हैं और आदमियों की पत्रिकाओं में भी वह छाई हुई है। वह वैसी ही जिंदगी जी रही है, जैसी चाहती है। फ्रांस ने भी उसे बुलावा भेजा है कि हमारे यहां आए और काम करे। इन सबके बीच लोग भूल जाते हैं कि वह अच्छी कलाकार है और उसने आला दर्जे का काम किया है। ऐसी ही कुछ कहानी ईरान के जफर पाहानी की भी है, जिन्होंने बहुत मुश्किलों से अपना रास्ता तय किया है। सरकार ने उन्हें 2010 में छह साल जेल की सजा दिलवाई थी और बीस साल तक फिल्में बनाने पर रोक लगाई थी, फिर भी उस दौरान उन्होंने तीन फिल्म बनाने की हिम्मत की। उनमें से एक फिल्म **'टैक्सी'** ने बर्लिन में गोल्डन बीयर अवार्ड कुछ साल पहले जीता था। आप यकीन नहीं करेंगे, उन्होंने खुद को टैक्सी ड्रायवर की तरह दिखाया था। तेहरान में अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए घर से बाहर रहा और टैक्सी चला कर यात्रियों से बातें की और उसे ही फिल्मा लिया। इसके लिए छोटे कैमरे और डैश बोर्ड का सहारा लिया और **'टैक्सी'** जैसी खूबसूरत फिल्म सामने आई।

हर कोई ऐसा नहीं कर सकता, जैसा पाहानी ने किया। कुछ लोग, मजीदी जैसे भी हैं और फरहानी जैसे भी, जो अपने काम से अपना घर तलाश लेते हैं। ऐसे ही माजिद मजीदी ने भारत में अपना घर तलाश लिया।